अव्यय वर्ग

[संस्कृत के जिन शब्दों पर लिङ्ग वचन-कारक का प्रभाव नहीं पड़ता-जिनके रूप चलाने की आवश्यकता नहीं होती जो सदा एक रूप रहते हैं ऐसे शब्दों को अव्यय कहा जाता है। यहाँ बहुप्रचलित अव्ययों का संकलन अनुवाद की दृष्टि से किया जा रहा है। इसीलिये वर्णानुक्रम हिन्दी अर्थों का दिया गया है जिससे किस अर्थ में किस संस्कृत शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए यह सुस्पष्ट हो जाता है।]

अक्सर – प्रायः, बहुधा, प्रायेण

अगर – चेत्, यदि

अचानक – सहसा

अच्छा (स्वीकृतिसूचक) – ओम्

अधिकतर – बहुधा, प्रायः

अब (इस समय) – साम्प्रतम्, अधुना

अब तक – अद्यावधि

अब भी – अद्यापि

अब रहने दो (काफी हो गया) – अलम्

अरे – रे

आखिर – अन्ततोगत्वा

आगे – पुरः, पुरतः, अग्रतः, पुरस्तात्

आज – अद्य

आजतक – अद्यावधि

आज भी – अद्यापि, इदानीमपि

आज से – अद्यारभ्य, अद्यप्रभृति

आपस में – मिथः, परस्परम्

आप ही आप – स्वयमेव

आवश्यकता नहीं – अलम् (यह तृतीया विभक्ति के साथ प्रयुक्त होता है जैसे- 'गमनेन अलम्')

आश्चर्य है – अहो

इच्छा भर – कामम्

इधर उधर – इतस्ततः

इसलिये – अतः

इस वर्ष – ऐषमे, ऐषमः

इस समय – साम्प्रतम्, इदानीम्, अधुना, सम्प्रति, एतर्हिः

इसी तरह – एवमेव

इसी तरह हो – एवमस्तु

इसीलिये – अतएव

उचित ही है – स्थाने, साम्प्रतम्

उस समय – तदानीम्

ऊँचा – उच्चैः

ऊपर – उपरि

ऊपर ऊपर – उपर्युपरि, अध्यधि (द्वितीया के साथ)

ऊपर नीचे – उपर्यधः

एक-एक करके – एकैकशः

एक जगह – एकत्र

एक समय – एकदा

एकाएक – सहसा

ऐसे – इत्थम्

और – च (वाक्य के पहले नहीं लगता)

कब – कदा

कभी – कदाचित्, जातु

कल (आने वाला) – श्वः

कल (बीता हुआ) – ह्यः, गतेद्युः

कहना ही क्या – किमुत

कहाँ – कुत्र

कहीं – कुत्रचित्

काफी (पर्याप्त) – अलम् (चतुर्थी के साथ जैसे– 'रामः रावणाय अलम्' अर्थात् राम रावण के लिये काफी है।)

कि – यत् (संज्ञा उपवाक्य के प्रारम्भ में जैसे- 'रामः सीतामकथयत् यत्....')

कितना – कियत्

कितनी बार – कतिशः

किसी प्रकार – कथमपि

कुछ (तादादमें कम) – ईषत्, मनाक्

कैसे – कथम्

क्या – किम् (सर्वनाम के रूप में– 'किं करिष्यसि' क्या करोगे)

क्या – कचित् (क्रियाविशेषण के रूप में– 'कचित् गमिष्यसि' क्या तुम जाओगे)

क्योंकि – यतः

खुद – स्वयम्

खैर (होगा) – अस्तु

चुपचाप – तूष्णीम्

चारों ओर – अभितः, परितः (द्वितीया के साथ– 'ग्रामम् अभितः' इत्यादि) सर्वतः, विष्वक्

चाहे – कामम्

छिपना, छिपाना – तिरः (जैसे–भू के साथ 'तिरोभवति')

जब – यदा

जबतक – यावत्

जबरदस्ती – प्रसह्य

जल्दी – सत्वरम्

जहाँ – यत्र

जहाँ तहाँ – यत्रतत्र

जितना – यावत्

जैसे – यथा

जैसे तैसे – यथा तथा

झटपट – झटिति, अञ्जसा, अह्नाय

झूठ – मृषा, मिथ्या

टेढ़ेपन से – साचि

ठीक रूप में – अञ्जसा

तड़के – प्रातः

तब – तदा, तदानीम्

तबतक – तावत्

तब से – ततः प्रभृति, तदारभ्य

तो – तर्हि

ताकि – यथा

तो भी – तथापि

दर असल – वस्तुतः, यथार्थतः

दिन में – दिवा

दूसरी जगह – अन्यत्र, अपरत्र

दोनों जगह – उभयत्र

द्वारा – द्वारा

धिक्कार है – धिक् (द्वितीया के साथ जैसे– 'धिक् कृष्णाभक्तम्')

धीरे धीरे – शनैः शनैः

नजदीक – निकषा (द्वितीया के साथ जैसे– 'लंकां निकषा')

नहीं – न, नो, नहि

निपट – सर्वथा

निश्चय ही – नूनम्

नीचे – अधः

नीचे नीचे – अधोऽधः

परसाल से पहले वर्ष – परारि

परसों – परश्वः

पहले – प्राक्

पीछे – पश्चात्, पृष्ठतः

पुराने समय में – पुरा, प्राक्

प्रकट होना – प्रादुः, आवि (भू के साथ 'प्रादुर्भाव', 'आविर्भाव' इत्यादि कहीं-कहीं स्वतन्त्र भी), प्रादुरासीत्

प्रणाम – नमः (चतुर्थी के साथ 'रामाय नमः'; 'कृ' धातु के प्रयोग में द्वितीया के साथ जैसे– 'नमस्करोति देवान्')

प्रातः काल – प्रातः, उषा, प्रगे

फिर भी – भूयोऽपि, पुनरपि

बदले – स्थाने

बस (अब अधिक नहीं) – अलम्

बहुत – अति

बहुत अच्छा (स्वीकृति वाचक) – बाढम्

बार बार – मुहुर्मुहुः, पुनः पुनः

बाहर – बहिः

बाहर भीतर – अन्तर्बहिः

बिल्कुल – सर्वथा

भलीभाँति – सुष्ठु

भी – अपि

भीतर – अन्तः

भूतकाल – स्म (यह वर्तमान क्रिया के साथ लगकर उसे भूतकाल की क्रिया बना देता है जैसे– 'गच्छति स्म')
मत (मना करना) – मा, मास्म, मा-अलम्
मर कर – प्रेत्य
मार्फत – द्वारा
यदि – चेत्
यदि कहो (उत्तर देने में) – चेत्
यदि कहो (विपरीत पक्ष की स्थापना में) – ननु
यद्यपि – यद्यपि
यहाँ – अत्र
या – वा, अथवा
यों ही – इत्यमेव
रात में – दोषा, नक्तम्
लगातार – शश्वत्
लेकिन – किन्तु, परन्तु
वहाँ – तत्र
वरन् – अपितु
वास्तव में – वस्तुतः
वाह वाह – साधु साधु
विषय में – अन्तरेण (द्वितीया के साथ– 'राममन्तरेण')
बेकार – वृथा
वैसे – तथा
शाम – सायम्
शायद – स्यात्, कदाचित्
शीघ्र ही – झटिति, सपदि, सद्यः
सचमुच – अद्धा
सब जगह – सर्वत्र
साथ – सह, साकम्, सार्धम्, समम् (तृतीया के साथ जैसे - 'रामेण सह' इत्यादि)
सामने – पुरः, पुरतः, अग्रतः
सिवाय (छोड़कर) – ऋते (पञ्चमी के साथ जैसे- 'रामात् ऋते')
सुबह – प्रातः
सौभाग्य से – दिष्ट्या
हमेशा – सदा, सर्वदा
हाय (खेद में) – हन्त
हाँ (स्वीकृति में) – आम्
हे (सम्बोधन में) – भोः, हे
होगा (ऐसा ही-सही) – अस्तु

English synonyms of common Sanskrit usage as अव्यय

about (विषय में) अधिकृत्य, प्रति, परि, अनु (as विष्णुं प्रति, etc.)
after death (मरकर) प्रेत्य
again and again (बार-बार) पुनः पुनः
alas (खेद है) हन्त
a little (कुछ) ईषत्, मनाक्
all around (चारों ओर) अभितः, परितः, विष्वक् (with acc. ग्रामम् अभितः, etc.)
along with (साथ) सह, साकम्, सार्धम्, समम् (with intr. as रामेण सह)
also (भी) अपि
altogether (बिल्कुल) सर्वथा
always (हमेशा) सदा, सर्वदा
amen (be it so) (ऐसा ही हो) एवमस्तु तथास्तु
and (और) च
any how (किसी प्रकार) कथमपि
as (जैसे) यथा
as much as (जितना) यावत्
assent ओम्
at dawm प्रातः
at one place (एक जगह) एकत्र
at will (इच्छा भर) कामम्
because (क्योंकि) यतः
becoming visible (प्रकट होना) प्रादुः, आविः
beforehand (पहले) प्राक्